प्लास्टिक का कहर

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आकलन के मुताबिक, साल 2017-18 में भारत में 6.6 लाख टन से अधिक प्लास्टिक कचरा पैदा हुआ था. लेकिन यह पूरी तस्वीर नहीं है. देश के 35 क्षेत्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों में से सिर्फ 14 ने ही ऐसे कचरे के बारे में जानकारी दी थी. वर्ष 2016-17 में केवल 25 बोर्डों ने केंद्रीय बोर्ड को जानकारी दी थी. विवश होकर बोर्ड को राष्ट्रीय हरित ट्रिब्यूनल की शरण लेनी पड़ी थी. ट्रिब्यूनल ने इस वर्ष 30 अप्रैल तक सभी क्षेत्रीय केंद्रों से जानकारी देने का निर्देश दिया था. परंतु, लापरवाही का आलम यह है कि आंध्र प्रदेश, सिक्किम, पश्चिम बंगाल और पुद्दुचेरी के अलावा किसी भी अन्य राज्य ने रिपोर्ट नहीं दिया है. अब इन 25 राज्यों को हर महीने एक करोड़ रुपये का अर्थदंड देना पड़ सकता है. जिस देश में 1.65 करोड़ टन प्लास्टिक की सालाना खपत होती हो, इसमें 43 फीसदी का इस्तेमाल सिर्फ एक बार होता हो, कुल उत्पादन का 80 फीसदी कचरे में फेंक दिया जाता हो तथा कचरे का 40 फीसदी से ज्यादा हिस्सा जमा भी नहीं होता हो, वहां इस समस्या के प्रति अगंभीर प्रशासनिक रवैया बेहद चिंताजनक है. प्लास्टिक कचरे के बारे में सही आंकड़ों को जुटाना बहुत जरूरी है, क्योंकि भारत ने एक बार इस्तेमाल होनेवाले प्लास्टिक पर धीरे-धीरे पाबंदी लगाने का संकल्प लिया है तथा प्लास्टिक कचरे के आयात पर भी रोक लगा दी है. जो कचरा जमा नहीं हो पाता है, वह आखिरकार समुद्र में और जमीन पर बिखर जाता है तथा मनुष्य समेत तमाम जीव-जंतुओं के लिए भारी नुकसान की वजह बनता है. हम किसी भी शहर में टीले बनते कचरे के ढेर में प्लास्टिक की बहुतायत देख सकते हैं. महानगरों में तो कचरे के बड़े-बड़े पहाड़ बनने लगे हैं. गलियों, सड़कों, नालियों और नदियों में भी ऐसा कचरा पसरे देख सकते हैं. समुद्र में तो इतना प्लास्टिक जमा हो चुका है कि उसकी सफाई करना असंभव हो चुका है. भारी खर्च और श्रम के कारण समुद्री तटों को भी साफ नहीं रखा जा सकता है. एक आकलन के मुताबिक, 2050 तक समुद्र में प्लास्टिक की मात्रा तमाम मछलियों के कुल वजन से ज्यादा हो जायेगी. ऐसे में यह दुर्भाग्य ही है कि न तो देश के स्तर पर और न ही अंतरराष्ट्रीय समुदाय की ओर से इस संकट से जूझने की कोई ठोस पहलकदमी हो रही है. हाल में इस मुद्दे पर हुए संयुक्त राष्ट्र की बैठक में कोई वैश्विक सहमति नहीं बन पायी. प्लास्टिक के नुकसान पर चर्चाओं और जागरूकता अभियानों के बावजूद हमारे देश में इसके उपभोग में कमी के संकेत नहीं हैं, बल्कि इसमें बढ़ोतरी ही हो रही है. औद्योगिक रिपोर्टों के अनुसार, 2015 में इसका कुल उत्पादन 1.34 करोड़ टन हुआ था, जिसके 2020 में 2.20 करोड़ टन होने का अनुमान है. इसमें लगभग आधा एक बार इस्तेमाल होनेवाला प्लास्टिक होगा. आवश्यकता है कि पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों में प्लास्टिक पर नियंत्रण को प्राथमिकता दी जाये.

प्लास्टिक के नुकसान पर चर्चाओं और जागरूकता अभियानों के बावजूद हमारे देश में इसके उपभोग में कमी के संकेत नहीं हैं, बल्कि इसमें बढ़ोतरी ही हो रही है.

संबंधों को विश्वास का ठोस आधार

अवधेश कुमार
वरिष्ठ पत्रकार
awadheshkum@gmail.com

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का दूसरी बार पद ग्रहण करने के बाद पहली एवं दूसरी विदेश यात्रा के लिए मालदीव और श्रीलंका के चयन का विशेष महत्व है. मोदी ने इसके द्वारा संदेश दिया कि 'पड़ोसी प्रथम' नीति केवल सिद्धांत नहीं भारत के आचरण में निहित है. श्रीलंका यात्रा वहां की सरकार, सुरक्षा एजेंसिया, नागरिकों एवं वहां रह रहे भारतीयों के साथ एकता दर्शाने एवं उनके बीच आत्मविश्वास पैदा करने के लिए था. आतंकवादी हमले के बाद वहां पहुंचनेवाले वे पहले विदेशी नेता बने. श्रीलंका ने इस नाते उनका स्वागत किया. इससे पर्यटकों के आने का सिलसिला आरंभ होगा तथा उसकी अर्थव्यवस्था को भी गति मिलेगी. मोदी हवाई अड्डे पर उतरते ही प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंघे के साथ कोलंबो स्थित सेंट एंथनी चर्च पहुंचे, जहां ईस्टर हमले में मारे गये लोगों को श्रद्धांजलि दी और ईसाई नेताओं से मुलाकात की. इसका संदेश साफ था. उसके बाद राष्ट्रपति मैत्रिपाला सिरिसेना के साथ सारे विषयों पर अनौपचारिक चर्चा की. इस दौरान श्रीलंका सरकार की कैबिनेट के सहयोगी, सभी नौ राज्यों के मुख्यमंत्री और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे. वह दृश्य अद्भुत था, जब स्वागत समारोह के दौरान अचानक बारिश हुई तो खुद राष्ट्रपति सिरिसेना नरेंद्र मोदी के सिर पर छाता तानकर चलने लगे. फिर इंडिया हाउस में पूर्व राष्ट्रपति महिंदा राजपक्षे और तमिल नेशनल अलायंस के अन्य नेताओं से मुलाकात कर मोदी ने न केवल भारत की सभी दलों के साथ समान व्यवहार की नीति का परिचय दिया, बल्कि आतंकवाद के विरुद्ध श्रीलंकाई एकता को मजबूत करने की भी भूमिका निभायी. कठिन समय में श्रीलंका के लिए यह बहुत बड़ा सहयोग था, जिसका सकारात्मक असर आनेवाले लंबे समय तक दोनों देशों के रिश्तों पर रहेगा.

इसके समानांतर मालदीव की यात्रा औपचारिक द्विपक्षीय श्रेणी की थी. हालांकि, मोदी पिछले वर्ष नवंबर में वहां के राष्ट्रपति इब्राहिम मोहम्मद सोलिह के शपथग्रहण समारोह में गये थे, लेकिन वह पूर्ण द्विपक्षीय यात्रा नहीं थी. पहले कार्यकाल में दक्षिण एशिया में एकमात्र देश मालदीव ही था, जहां वे चाहकर भी द्विपक्षीय यात्रा नहीं कर पाये थे. राष्ट्रपित इब्राहिम मोहम्मद सोलिह पद संभालने के बाद पहली विदेश यात्रा के रूप में दिसंबर में भारत आये और उस समय हुए समझौतों से गाड़ी पटरी पर लौट आयी. मालदीव की सबसे बड़ी समस्या अब्दुल्ला यामीन द्वारा इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं के नाम पर चीन से लाखों डॉलर का कर्ज लेना था, जिससे देश चीन के कर्ज जाल में फंस गया. सोलिह की यात्रा के दौरान करीब तीन अरब डॉलर के चीनी कर्ज में फंसे मालदीव को 1.4 अरब डॉलर की वित्तीय मदद की घोषणा सहित कई समझौते किये गये. प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा के साथ दोनों देशों ने अपने आर्थिक, सामरिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संबंधों को उससे काफी आगे ले जाकर और सशक्त किया है.

प्रधानमंत्री मोदी अपने हर कार्यक्रम को भावनाओं और दोनों देशों की परस्पर एकता दर्शानेवाली सभ्यता-संस्कृति के साथ आबद्ध करके उसे विशेष स्वरूप दे देते हैं. इब्राहिम सोलिह के साथ द्विपक्षीय बातचीत आरंभ करने के पहले उन्होंने उन्हें भारतीय क्रिकेट टीम के सदस्यों के हस्ताक्षर वाला बैट भेंट किया. मालदीव ने भारत से अपने नेशनल क्रिकेट टीम को तैयार करने में मदद का अनुरोध किया है. भारत वहां एक क्रिकेट स्टेडियम बनाने जा रहा है.

दोनों देशों के बीच रक्षा, सुरक्षा और कनेक्टिविटी समेत कई महत्वपर्ण समझौते हुए हैं. दोनों देश नागरिकों का आवागमन बढ़ाने के लिए भारत में कोच्चि और मालदीव में कुल्तुफुशी और माले के बीच नौका सेवा शुरू करने पर सहमत हुए हैं. दोनों नेताओं ने रक्षा और समुद्री सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में अपना द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने के लिए वार्ता की. उन्होंने माफिलाफुशी में मालदीव राष्ट्रीय रक्षा बल की समग्र प्रशिक्षण संस्थान और भारत द्वारा निर्मित तटीय निगरानी रडार प्रणाली का उद्घाटन किया. यह रडार प्रणाली काफी महत्व रखता है, क्योंकि चीन हिंद महासागर में अपनी समुद्री रेशम मार्ग परियोजना के लिए मालदीव को महत्वपूर्ण मानता है. तटीय निगरानी रडार, एकीकृत तटीय निगरानी प्रणाली के लिए प्राथमिक सेंसर है. दोनों देशों ने भारतीय नौसेना और मालदीव राष्ट्रीय रक्षा बल के बीच व्हाइट शिपिंग सूचनाएं साझा करने के लिए तकनीकी समझौते पर भी हस्ताक्षर किये. व्हॉइट शिपिंग समझौते के तहत दो देश एक-दूसरे के समुद्री क्षेत्र में वाणिज्यिक जहाजों के बारे में दोनों देशों की नौसेना के बीच सूचना का आदान-प्रदान करते हैं.

राष्ट्रपति सोलिह ने मोदी को विदेशी हस्तियों को दिया जानेवाला सबसे बड़ा सम्मान 'द मोस्ट ऑनरेबल ऑर्डर ऑफ द डिस्टिंग्विश रूल ऑफ निशान इज्जुद्दीन' से सम्मानित करके भारत के प्रति सम्मान तथा दोस्ती के प्रति ईमानदार भावना का परिचय दिया. मोदी ने कहा कि मालदीव की हरसंभव सहायता करने के लिए भारत हमेशा प्रतिबद्ध है. संसद से पूरे मालदीव को मोदी ने संदेश दिया कि भारत की विकास साझेदारी लोगों को सशक्त करने के लिए है, उन्हें कमजोर करने, खुद पर निर्भरता बढ़ाने या भावी पीढ़ियों पर कर्ज का बोझ लादने के लिए नहीं है. यह एक ओर चीन की कुटिल नीति की ओर लक्षित था, जिसने भारी कर्ज देकर संकट में फंसा दिया, वहीं दूसरी ओर भारत की मित्र देश की निःस्वार्थ सहायता का ऐलान. मोदी ने कहा कि मालदीव की भाषा दिबेही और भारतीय भाषाओं में व्यापक समानता हमारे एक होने का प्रमाण है. इसलिए मालदीव की सांस्कृतिक धरोहर के संवर्धन, दिबेही के शब्दकोष के विकास जैसी परियोजनाओं में मालदीव को सहयोग देना भारत के लिए महत्वपूर्ण है. मोदी की एक बड़ी घोषणा मूंगा से बनी दुनिया की अकेली फ्राइडे मस्जिद के संरक्षण में भारत के सहयोग संबंधी थी.

श्रीलंका की कुछ घंटे तथा मालदीव की एक दिवसीय यात्रा के फलितार्थ व्यापक हैं. मालदीव का कार्यक्रम भले व्यस्त था, लेकिन इसके पीछे की जबरदस्त तैयारी में बहुआयामी संबंधों को ठोस आधार देने की झलक साफ थी. वास्तव में इस यात्रा से संबंधों का ज्यादा सुदृढ़ीकरण हुआ तथा स्वाभाविक भाईचारे, दोस्ती और कठिन परिस्थितियों में बिना बुलाये मदद के लिए खड़ा रहने का विश्वास दिलाकर प्रधानमंत्री मोदी ने मानवता और भावुकता की आवश्यक दीवार, स्तंभ और रंग-रोगन के साथ स्थिर रिश्तेदारी के भवन को पुनः खड़ा कर दिया. इसके बाद भारत मालदीव के साथ और मालदीव भारत के साथ संबंधों को लेकर निश्चिंत रह सकता है.

श्रीलंका की कुछ घंटे तथा मालदीव की एक दिवसीय यात्रा के फलितार्थ व्यापक हैं. मालदीव का कार्यक्रम भले व्यस्त था, लेकिन इसके पीछे की जबरदस्त तैयारी में बहुआयामी संबंधों को ठोस आधार देने की झलक साफ थी.

बोधि वृक्ष

विश्वात्मा

विश्वात्मा- विश्व संसार है, आत्मा चेतना है. विश्वात्मा शाश्वत चेतना है. क्या तुम अपने जीवन के बारे में जानते हो? तुम तो यह भी नहीं जानते कि तुम कौन हो? तुम अपनी नींद या स्वप्नों के बारे में नहीं जानते- स्वप्न क्यों आते हैं, हम नहीं जानते. अहंकार तब आता है जब तुम सोचते हो कि तुम कुछ जानते हो. तुम निर्हंकारी (अहंकार से मुक्त) हो सकते हो, जब तुम्हारा मन शांत होता है और तुम जानते हो कि तुम कुछ नहीं जानते. जब तुम मंदिर जाते हो, तुम नहीं जानते कि पुजारी क्या कर रहा है या कौन सा मंत्र पढ़ रहा है, पर तुम्हें विश्वास होता है कि कुछ भला ही होगा. पुराणों में एक कथा है. ब्रह्मा (निर्माता) और विष्णु (पालनकर्ता) ने शिव (संहारक) के बारे में जानना चाहा. शिव आदि या अंत से परे अनंत हैं. तो ब्रह्मा, शिव के सिर और विष्णु, उनके पैरों की खोज के लिए चल पड़े. वे युगों तक चलते रहे, पर शिव के आदि या अंत में से किसी का पता नहीं लगा सके. उन्होंने वापस लौटने का निर्णय लिया. अपने लौटने के मार्ग पर ब्रह्मा ने एक केतकी का फूल गिरते हुए देखा और उससे पूछा कि वह कहां से आ रहा है. फूल ने कहा कि वह शिव के सिर का शृंगार था. ब्रह्मा ने सोच लिया कि उन्होंने शिव के सिर को देख लिया और यही विष्णु को बता दिया. विष्णु ने कहा कि वह शिव के पैरों को नहीं पा सके. यह ब्रह्मांड अनंत विस्तार है. इस अनंत ब्रह्मांड में व्याप्त चेतना भी अनंत और अज्ञेय है. यह केवल प्रेम करने योग्य है. ईश्वर को जानने की चेष्टा न करो. ईश्वर, जिसे जाना नहीं जा सकता, उससे बस प्रेम करो. यही श्रद्धा है. जब तुम ध्यान करते हो और अन्य लोगों के इतने अच्छे अनुभवों के बारे में सुनते हो, तो तुम सोचने लगते हो कि मेरी क्या स्थिति है? इस बात में मत फंसो. यह जानो कि ईश्वर को जाना नहीं जा सकता. मैं कुछ नहीं जानता- यह ध्यान का मूल है. पर इसका गलत प्रयोग मत करो. यदि कोई तुमसे पूछता है कि तुम कहां से आ रहे हो या क्या समय है, तो यह मत कहो कि मैं नहीं जानता. यह ठीक नहीं है. जब तुम ध्यान में बैठो, तब इसका उपयोग करो.

श्रीश्री रविशंकर

अजीम प्रेमजी का परोपकारी व्यक्तित्व

आकार पटेल
कार्यकारी निदेशक, एमनेस्टी इंटरनेशनल इंडिया
delhi@prabhatkhabar.in

धनी व्यक्ति को अपनी संपति समाज को वापस सौंप देना चाहिए और उसे धनवान के रूप में नहीं मरना चाहिए, यह विचार एंड्रयू कार्नेगी का है. कार्नेगी एक अमेरिकी उद्यमी थी, वे खुद के बूते बने थे और उन्होंने इस्पात का साम्राज्य खड़ा किया था. उन्होंने 35 वर्ष की उम्र से अपनी संपत्ति दान करना शुरू कर दिया था. सौ वर्ष पूर्व 1919 में उनकी मृत्यु हो गयी और उस समय तक उन्होंने अपनी कुल संपत्ति का 90 प्रतिशत दान में दे दिया था. अपनी मृत्यु के 30 वर्ष पहले 1889 में, जब उनकी उम्र 50 से 60 के बीच थी, उन्होंने 'द गॉस्पेल ऑफ वेल्थ' नाम से एक पुस्तक लिखा था. इसमें उन्होंने व्याख्या की थी कि क्यों अधिशेष धन का सबसे अच्छा उपयोग इसे वापस समाज में लाना था. उन्होंने धनी लोगों द्वारा फिजूलखर्ची और भोग-विलास में डूबे रहने को हतोत्साहित किया और निष्क्रिय लोगों पर कर बढ़ाने के लिए सरकार को प्रोत्साहित किया.

उन्नीसवीं सदी के पहले केवल अभिजात लोग ही धनी थे, जिनके पास भूमि होती थी और जिससे उन्हें किराया या कर मिलता था. इंग्लैंड की महारानी आज भी लंदन के एक हिस्से की मालकिन हैं और कर वसूलती हैं. बेशक कुछ व्यापारी भी थे, लेकिन उनकी संख्या अधिक नहीं थी. संपत्ति आम तौर पर भूमि के रूप में होती थी.

उस अवधि में दान की सोच अज्ञात थी, हालांकि चर्च वैसे लोगों से आय का एक हिस्सा वसूलता था, जो दे सकते थे. उसे दशमांश कहा जाता था और प्रायः आय का 10 प्रतिशत भाग होता था. इसका कुछ स्वरूप आज भी चलन में है. भारतीय शिया समुदाय के दाउदी बोहरा और इस्माइल खोजा तबके अपनी आय का एक भाग अपने धर्म प्रमुख सैयदना और आगा खान को देते हैं. इस पैसे को धर्म प्रमुख प्रायः दान-पुण्य के कार्यों, जैसे- अस्पताल या स्कूल में खर्च करते हैं. हिंदू भी मंदिरों में दान देते हैं, लेकिन उनमें से ज्यादा सोने के रूप में होता है. इसका इस्तेमाल नहीं हो सकता है. अभी मैं केरल में हूं और मैंने तिरुअनंतपुरम स्थित पद्मनाभस्वामी मंदिर का दर्शन किया. यह भारत के सबसे धनी मंदिरों में से है, पर इसका अधिकांश धन सोने के रूप में है.

इस संस्कृति पर अजीम प्रेमजी ने अपनी छाप छोड़ी है. पिछले सप्ताह वे विप्रो समूह के प्रमुख के पद से सेवामुक्त हुए. वे विश्व के महान परोपकारियों में हैं. प्रेमजी डेढ़ लाख करोड़ रुपये दान कर चुके हैं. हममें से अधिकतर को ये पता भी नहीं होगा कि यह राशि कितनी होती है. इसे एक संदर्भ में रखकर देखें, तो इससे भारत के स्वास्थ्य और शिक्षा बजट की भरपाई हो सकती है. यह राशि प्रेमजी के जीवनभर के कामों का प्रतिनिधित्व करती है. उन्होंने 21 वर्ष की उम्र में तेल बनानेवाली एक छोटी कंपनी विप्रो की कमान संभाली थी. उन्होंने दशकों तक इसका विस्तार किया, विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में. यहीं से उन्होंने ज्यादातर संपत्ति अर्जित की.

प्रेमजी जब धन कमा रहे थे, तभी उन्होंने इसे दान देना और न्यास बनाना शुरू कर दिया था. इससे यह सुनिश्चित हुआ कि अनुभवी पेशेवरों के हाथ में उनके पैसों का नियंत्रण था और वे प्रेमजी की तरफ से दान करते थे. यह प्रेमजी को असाधारण बनाता है, खासकर भारत में. हमारे धनिकों को वैभव पसंद है, जैसे- महलनुमा मकान, नौकाएं, निजी जेट और चित्ताकर्षक कारों का बेड़ा आदि. हम जैसे मध्य वर्ग के बाकी लोग इस तमाशे का बस आनंद लेते हैं और हम इसे पेज थ्री संस्कृति कहते हैं.

विश्व के धनाढ्य लोगों में से एक होने के बावजूद अजीम प्रेमजी ने बेहद सादगी के साथ अपना जीवन जिया है. उनकी यह सादगी तब भी दिखी थी, जब उन्होंने अपने पद को छोड़ने की घोषणा करते हुए विप्रो कर्मचारियों को एक पत्र लिखा. शुरुआत से लेकर पत्र का अधिकांश हिस्सा नये अध्यक्ष और नये प्रबंध निदेशक का परिचय देने के लिए समर्पित है. इस पत्र में उन्होंने अपना जिक्र एकदम अंत में किया है और खुद के बारे में अपने स्वभाव के अनुसार बहुत कम लिखा है. इस पत्र में उनकी अपनी उपलब्धियों का कोई उल्लेख नहीं है. मैं इस तरह के दूसरे किसी त्यागपत्र के बारे में नहीं जानता हूं, विशेषकर किसी ऐसे व्यक्ति का, जिसके नाम के साथ ऐसी उपलब्धियां जुड़ी हुई हैं.

एक भारतीय के रूप में हमारे पास व्यक्तिगत व्यवहार के आदर्श के रूप में बहुत कम प्रेरणास्रोत हैं. हम दिखावटी और करिश्माई व्यक्तियों को पसंद करते हैं, जिनके आचार-व्यवहार फिल्मी सितारों की तरह होते हैं.

हमें इस बात को अवश्य रेखांकित करना चाहिए कि आज के ऐसे माहौल में एक अरबपति ने ऐसा काम किया है, जो आज तक किसी ने नहीं किया है तथा उन्होंने ऐसा पूरी विनम्रता और सम्मान के साथ किया है. आधुनिक युग में कुछ ही चीजें मुझे गुजराती होने पर गर्व महसूस कराती हैं. लेकिन प्रेमजी का जीवन निश्चित तौर पर उनमें से एक है. हम सभी इसे एक उदाहरण के रूप में देख सकते हैं और कह सकते हैं: 'यही वह है, जिसके लिए मनुष्य सक्षम है.'

विश्व के धनाढ्य लोगों में से एक होने के बावजूद अजीम प्रेमजी ने बेहद सादगी के साथ अपना जीवन जिया है. उनकी यह सादगी तब भी दिखी थी, जब उन्होंने अपने पद को छोड़ने की घोषणा करते हुए विप्रो कर्मचारियों को एक पत्र लिखा.

आपके पत्र

गिरता भूजल स्तर

साल-दर-साल भूजल स्तर में भी कमी आ रही है. भारत के अनेक राज्य पानी की कमी के चलते बेहाल हैं. कूप सूख चुके हैं. नदी, तालाब और अन्य जलस्रोत अतिक्रमित हैं. अत्यधिक जलदोहन और समुचित संरक्षण के अभाव के चलते जल अभाव की विकरालता आने वाले समय में समस्त जीवों के लिए बड़े संकट की घंटी है. शहरों और महानगरों में जिस प्रकार पानी की बर्बादी हो रही है, उससे तो इन शहरों में रहने वाले लोगों का अस्तित्व खतरे में है. जमीन से 500 फीट से भी नीचे से सबमर्सिबल पंपों द्वारा पानी निकाल कर घरों के फर्श और गाड़ियों को धोया जा रहा है तथा बेतहाशा पानी बहाया जा रहा है. ऐसे लगता है कि जल संकट जैसे मामलों में भी संपन्नता संवेदनशीलता में कमी ला ही देती है. इनको कोई रोकने वाला नहीं है. कुछ दबाव पड़ने पर कार्रवाई के नाम पर इनको सौ-पांच सौ का चालान थमा दिया जाता है, जबकि ठोस कार्रवाई की जरूरत है.

सतप्रकाश सनोठिया, रोहिणी

ब्रिटेन और राष्ट्रसंघ हस्तक्षेप करे

रविवार को हांगकांग में 10 लाख लोगों ने चीन के खिलाफ ऐतिहासिक प्रदर्शन किया. पहली जुलाई 1997, जब चीन के हाथों में हांगकांग की कमान आयी, उसके बाद इतना बड़ा प्रदर्शन कभी नहीं हुआ था. जब तक वह ब्रिटेन का उपनिवेश था, वहां का शासन-प्रशासन एक पूंजीवादी लोकतंत्र की नीति से चला रहा था. हस्तांतरण के वक्त ही चीन और ब्रिटेन में यह लिखित समझौता हुआ था कि हांगकांग के मामले में चीन एक देश-दो नीति के तहत काम करेगा. वर्ष 2047 तक उसे इस नियम से बंधे रहना था, मगर 2019 में ही चीन ने हांगकांग के लिए नयी प्रत्यर्पण नीति का ऐलान कर दिया, जिसके तहत आरोपियों को चीन प्रत्यर्पित करके मुकदमा चलाया जायेगा. यह एक दमनकारी अधिनायकवादी नीति है. ब्रिटेन और राष्ट्रसंघ को इसमें हस्तक्षेप करना चाहिए.

जंग बहादुर सिंह, गोलपहाड़ी, जमशेदपुर

ताजा सस्ता कर्ज !

आजकल बहुत कुछ हिदायत भरे अंदाज में रिजर्व बैंक कहता है, भले लोग समझें या न समझें. एक जमाने में कर्ज में डूबा व्यक्ति खुशहाली से महरूम, समाज की नजरों में गिरा हुआ इंसान होता था. आज खुशहाली की खातिर कर्ज के हौज में डुबकी लगाने को हर कोई बेताब है. कर्जों की बदौलत रोटी, कपड़ा और मकान के दिन भी बुलंदी पर हैं. 'ऋणं कृत्वा घृतं पीवेत' जैसा अनमोल वचन समृद्धि का मूल मंत्र बन गया है. याद हो, कभी सिगरेट उद्योग अर्थव्यवस्था की कुंजी थी, जिसे खूबसूरत इश्तहारों ने खूब बढ़ाया. जाने किसकी नजर लगी, वही सिगरेट 'सेहत के लिए हानिकारक' हो गयी. डर है, कर्जों की ज्यादा खुराक सेहत के लिए हानिकारक न हो जाए!

एमके मिश्रा, मां आनंदमयीनगर, रातू, रांची

पोस्ट करें : प्रभात खबर, 15 पी, इंडस्ट्रियल एरिया, कोकर, रांची 834001, **फैक्स करें** : 0651-2544006,
मेल करें : eletter@prabhatkhabar.in पर ई-मेल संक्षिप्त व हिंदी में हो. लिपि रोमन भी हो सकती है.

स्मृति शेष

दुर्लभ संस्कृतिकर्मियों में से थे नाटककार और अभिनेता गिरीश कर्नाड

अमितेश
रंगकर्म समीक्षक
amitesh0@gmail.com

गिरीश कर्नाड
19 मई, 1938 - 10 जून, 2019

गिरीश कर्नाड ने जब अपना पहला नाटक ययाति (1961) लिखा, तो आयु मात्र 23 साल की थी और तुगलक (1964) के प्रकाशन के साथ ही वे राष्ट्रीय रंगमंच के केंद्र में आ गये थे. प्रकाशन के साथ ही तुगलक का कन्नड़, मराठी और हिंदी में मंचन हुआ. इब्राहिम अल्काजी ने 1967 में इसे राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के लिए प्रस्तुत किया.

सुरेश अवस्थी, पुरुषोत्तम लक्ष्मण देशपांडे और इब्राहिम अल्काजी के संपादन में 'आज के रंग नाटक' (1973) के नाम से चार नाटकों का प्रकाशन हुआ, जिसमें मोहन राकेश, विजय तेंदुलकर, बादल सरकार के साथ गिरीश कर्नाड के नाटकों को भी रखा गया. यह भारतीय नाटककारों का एक चतुर्भुज था, जिसकी आखिरी भुजा का देहवसान हो गया. आजादी के बाद भारतीय रंगमंच में जिस राष्ट्रीय रंगमंच की खोज हो रही थी, उसे इन नाटकों ने एक रास्ता सुझाया था. सत्तर के दशक में जब भारतीय रंगमंच को लगा कि पाश्चात्य रंगमंच से प्रभावित नाट्य युक्तियों में कुछ अधिक बंधन हैं, तो खुलेपन और भारतीय रंग मुहावरे की तलाश नाटककारों को परंपराशील रंगमंच की युक्तियों तक ले गयीं, उस समय भी गिरीश कर्नाड ने हयवदन (1971) लिखकर रास्ता दिखाया, जिसमें कर्नाटक की शैली यक्षगान और भागवत मेला की युक्तियों का समावेश था, इसके बाद 'थियेटर ऑफ रूट्स' के नारे ने जोर पकड़ा.

नाटककार के रूप में गिरीश कर्नाड लगभग छह दशकों तक सक्रिय रहे. महाभारत की कथाओं पर आधारित नाटक 'ययाति' और 'अग्निवर्षा' लिखा. इतिहास के माध्यम से भी वो वर्तमान को टटोलते हैं. 'तुगलक' में एक सुल्तान की अपनी महत्त्वाकांक्षा का द्वंद्व है, जिसका असर उसकी रियाया पर होता है. 'रक्त कल्याण' में बसवण्णा के चरित्र के माध्यम से धर्म और धार्मिक समुदाय के भीतर चल रहे संघर्ष का विवरण है. उनका अंतिम प्रकाशित नाटक 'राक्षसा तंगाड़ी' भी तालीकोटा के युद्ध पर आधारित है. सीधे-सीधे समसामयिक जीवन को भी विषय बनाते हैं. 'बेंडा कालू ऑन टोस्ट' नाटक महानगर के रूप में पसरते शहरों की गाथा है, जिसमें कई तरह की संस्कृतियां शहर के अलग-अलग छोरों पर रहती हैं, जिसके आपसी मेल से शहर बनता है, लेकिन ये एक-दूसरे से अनजान बने रहते हैं. कॉस्मोपोलिटन का दावा करनेवाले शहरों की संकीर्णता कैसी है, इसको सूक्ष्मता से नाटक में बुना गया है. स्त्री उनके नाट्य लेखन के केंद्र में रही है, चाहे स्त्री किरदार हों 'अग्निवर्षा' की विशाखा जैसी या स्त्री किरदार को आधार बनाकर लिखा गया नाटक 'बिखरे बिंब' हो, जो एक औसत लेखिका के छल के आधार पर बड़ा लेखक बनने की महत्त्वाकांक्षा की कहानी है. स्त्री की यौनिकता और देह पर उसके अधिकार पर उन्होंने 'नागमंडल' जैसा नाटक लिखा. अपने नाटकों में रंगभाषा को भी निरंतर अद्यतन बनाया है. कर्नाड ने अपने नाटकों में ऐसे चरित्रों की रचना की है, जो अपने भीतर के द्वंद्व और बाहर की दुनिया के असामंजस्य के कारण उपजे संघर्ष से जूझते रहते हैं. जाति, धर्म और संस्कृतियों के भीतर के वर्चस्व, शोषित तबके के शोषण का कारण और इन सबमें स्त्री के अपने प्रश्न उनके नाटकों में विद्यमान हैं.

साल 1970 में ही गिरीश कर्नाड ने यूआर अनंतमूर्ति के उपन्यास पर आधारित 'संस्कार' फिल्म में प्राणेशाचार्य की मुख्य भूमिका निभायी. 'वंशवृक्ष' का निर्देशन किया और इसके लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार भी मिला. अभिनय भी करते रहे, अभिनेता के तौर पर एक तरफ 'निशांत' जैसे समानांतर फिल्मों में काम किया, तो 'एक था टाइगर' जैसी मुख्यधारा के सिनेमा में भी. फिल्म में नाक में ड्रिप लगाये रॉ के मुखिया के तौर पर वे दिखते हैं. नागेश कुकूनर की फिल्म 'इकबाल' में कोच की उनकी भूमिका भी अविस्मरणीय है.

गिरीश कर्नाड का जीवन इतना बहुमुखी है, जिसके एक सिरे को पकड़ो, तो दूसरा हाथ से छूटने लग जाता है. भारतीय ज्ञानपीठ, संगीत नाटक अकादमी, पद्म भूषण, साहित्य अकादमी, कालिदास सम्मान, वंशवृक्ष के लिए श्रेष्ठ निर्देशन का राष्ट्रीय पुरस्कार, गोधुली के लिए श्रेष्ठ पटकथा का फिल्मफेयर अवॉर्ड, ये कुछ ही पुरस्कार हैं, जबकि सूची बहुत लंबी है.

गिरीश कर्नाड का जन्म 1938 में माथेरान, महाराष्ट्र में हुआ. वे रोड्स स्कॉलर भी थे, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी पढ़ने भी गये और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस में नौकरी भी की. साल 1970 में भाभा फेलोशिप मिली और उसके बाद नाटक, रंगमंच और सिनेमा की दुनिया में रम गये. गिरीश उन दुर्लभ संस्कृतिकर्मियों में से एक थे, जिनके सरोकार की अभिव्यक्ति केवल उनकी रचनाओं में ही नहीं रचना से बाहर सार्वजनिक जीवन में भी होती रही, इसमें उम्र और बीमारी को भी उन्होंने दूर धकेल दिया और सड़क पर उतरे. गौरी लंकेश की हत्या के बाद उनके हाथों की 'मी टू अर्बन नक्सल' की तख्ती कौंधती रहती है. गिरीश नेहरूवियन आधुनिकता की दौर की उपज थे. लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता उनके जीवन के मूल्य थे. अंग्रेजी के विद्वान थे, कन्नड़ में लिखते थे, अपने नाटकों का अंग्रेजी में अनुवाद भी किया और हिंदी समेत अनेक भाषाओं में काम किया. कर्नाड कला के विभिन्न माध्यमों से सहज तालमेल स्थापित करते हैं. उनके शिल्प में राजनीति का गहरा समावेश है, जिसका स्वर अक्सर प्रतिरोध का है.